



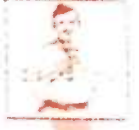
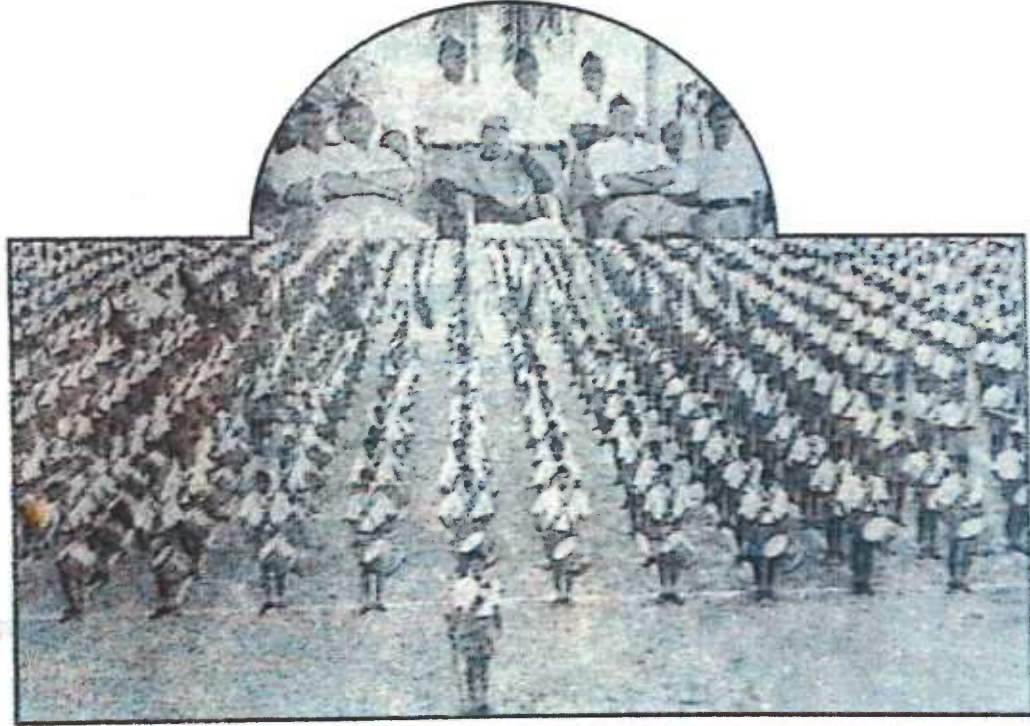
# घोष तरंग

वंशी

विद्यया ऽमृतं

# घोष तरंग

## वंशी



# वंशी रचना

## अंतरंग

स्वरलेखन	7	15 शरावती	25	31 विजया	42	8 इंद्रप्रस्थ	61
<u>प्रचलनगति</u>		16 देशकार	26	32 गणेश	44	9 देवदत्त	62
1 ध्वजारोपणम्	13	17 श्रीपाद	27	33 पारिजातम्	46	10 तुंगा	63
2 भूप	14	18 कल्याणी	28	34 गुणवंत	48	11 तोडी	64
3 केदार	14	19 प्रसाद	29	35 कालगति	49	12 मारवा	65
4 तिलककामोद	15	20 शंकरा	30	36 विष्णुपदी	50	13 बागेश्री-एक	66
5 तिलंग	16	21 राजश्री	31	37 भीमपलास	51	14 बागेश्री-दो	67
6 पहाडी	16	22 खमाज	32	38 वंदेमातरम्	53	15 केतकी	68
7 शिवरंजनी	17	23 कैरलि	33	<u>मंदगति</u>		16 आसावेरी	69
8 दुर्गा	18	24 हरिकांबोजि	34	1 कर्नाटकी	54	17 कलावती	70
9 वलचि	19	25 बदरी	35	2 तिलककामोद	55	18 केशवश्री	71
10 भारतम्	20	26 केकावली	36	3 शिवराजः	56	19 आरुणी	73
11 बागेश्री	21	27 रामरंजनी	38	4 वेलावल	57	20 केशवः	76
12 हंसध्वनि	22	28 गौडमल्हार	39	5 कल्याण	58	वंशी स्वरपरिचय	77
13 हंसवाहिनी	23	29 मधुकर	40	6 शारदा	59		
14 हररंजनी	24	30 धानी	41	7 कलिंगडा	60		



## स्वर लेखन

घोष रचनाओं का लेखन करने के लिए प्रयुक्त स्वरलिपि, उससे संबंधित शब्दों की परिभाषा तथा अन्य संबद्ध विषयों का संक्षिप्त परिचय यहां दिया गया है। 'घोष परिचय' पुस्तक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

**स्वर :** वाद्यों के वादन से निर्मित कंपित वायुमंडल के ध्वनितरंगों से नाद सुनायी देता है। संगीतोपयोगी नादस्थानों को 'स्वर' कहते हैं।

**वंशी :** वंशी में स री ग म प ध नि इस क्रम से सात स्वर बजाए जाते हैं। प्रत्येक स्वर का एक नाम तथा निश्चित कंपनसंख्या होती है। री ग ध नि यह चार स्वर अपनी निश्चित क्षमता से कम कंपन के तथा म अधिक कंपन का भी हो सकता है। इन पांचों को 'विकृत स्वर' कहते हैं। इनके स्वराक्षरों के नीचे छोटी अधोरेखा खींचते हैं। ये स्वराक्षर निम्न प्रकार से लिखते हैं।

स री री ग ग म म प ध ध नि नि

**स्वर-सप्तक :** सात स्वरों के स्वरसमूह को 'स्वर-सप्तक' कहते हैं। सहजता से फूंक लगाने पर 'मध्य-सप्तक' मिलता है। इसके नीचे से मिलने वाले सात स्वरों को 'मंद्र-सप्तक' एवं ऊपरी स्तर के सात स्वरों को 'तार-सप्तक' कहते हैं। ये तीनों स्वरसप्तक निम्नानुसार लिखते हैं।

मंद्र : स० री० ग० म० प० ध० नि० मध्य : स री ग म प ध नि तार : स० री० ग० म० प० ध० नि०

विकृति-चिन्ह तथा सप्तक-चिन्ह इन दोनों का उपयोग कर, तीनों सप्तकों में विकृत-स्वरों के सभी संभाव्य प्रकार नीचे दिए हैं।

मंद्र-सप्तक : री० ग० म० प० ध० नि० मध्य-सप्तक : री ग म प ध नि तार-सप्तक : री० ग० म० प० ध० नि०

**राग :** स्वरों के विशिष्ट संयोगों से रागों का निर्माण होता है। संयोग अनेक विध हो सकते हैं, किंतु जिन स्वर-संयोगों में रंजकता होती है, वेही 'राग' कहलाते हैं। स्वरों में आरोह-अवरोह, वादी-संवादी, वर्ज्यावर्ज्य आदि भेद हैं। इनका ध्यान रखकर स्वरों का जो विन्यास किया जाता है, उसीसे 'राग' का आविष्कार होता है।

**शंख :** शंख वादन में कुल पांच स्वर होते हैं। ये निम्नानुसार हैं।

स० प० स० ग० प०

इसके आगे नि तथा स स्वर, भी आते हैं, जिनका उपयोग क्वचित किया जाता है।





आनक तथा अन्य तालवाद्य : घोष के पणव, आनक, स्वर्जानक, त्रिभुज, झल्लरी जैसे तालवाद्यों के वादन का लक्षण निम्न प्रकार से किया जाता है। उन्हें ध्वन्याक्षर कहते हैं।

वाद्य	ध्वनि	ध्वन्याक्षर
पणव	धंकार	ध
स्वर्जानक	धंकार	ध
आनक	तंकार	त
त्रिभुज	टंकार	ट
झल्लरी	झंकार	झ

शारिकाओं द्वारा आनक पर आघात करने से 'तंकार' उत्पन्न होता है। आनक के वादन विन्यास को व्यक्त करने के लिए 'त' के अतिरिक्त और भी ध्वन्याक्षरों का उपयोग किया जाता है, जिनका विवरण निम्नानुसार है।

#### अपेक्षित वादन

#### ध्वन्याक्षर

- |  |     |     |
|--|-----|-----|
| ★ दोनों शारिकाओं से एक साथ आघात :  | --- | थ   |
| ★ दोनों शारिकाओं से एक साथ अनुतंकार :  | --- | थ्र |
| ★ प्रमुख तंकार के किंचित् पहले दूसरे शारिका से -                                       |     |     |
| 1. एक तंकार :  | --- | त्त |
| 2. अनुतंकार सहित तंकार :   | --- | त्र |
| ★ केखा रणन : $\frac{दा\ बा\ दा\ बा}{त^{\alpha}\ त^{\alpha}\ त^{\alpha}\ त^{\alpha}} =$ | --- | त्र |
| ★ खेमटा रणन : $\frac{दा}{त^{\alpha\alpha}} =$  | --- | त्र |
| ★ शारिकाएं परस्पर टकराने से आनेवाली 'टिक्' ध्वनि :                                     | --- | +   |

रणन : तंकार को यदि नियंत्रित नहीं किया, तो शारिका आवरण पर दो-चार बार उछलती है। क्रमेण क्षीण होते जाने वाले इस नाद को 'अनुतंकार' कहते हैं। इनका योग्य नियंत्रण कर, (१) केवल तंकार, (२) एक तंकार एवं एक अनुतंकार अथवा (३) एक तंकार



एवं दो अनुतंकार प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार के तंकारानुवर्ति अनुतंकार के साथ साथ, तांत के प्रत्याघाती कंपनों को मिलाकर 'रणन' बनता है। केरवा रणन में चार तंकारानुवर्ति अनुतंकार तथा खेमटा रणन में एक तंकार के बाद दो अनुतंकारों का वादन अपेक्षित है। खेमटा ताल में रणन संघ का वैशिष्ट्य है।

**मात्रा :** स्वर लेखन में जिस प्रकार कौनसा स्वर बजेगा यह स्पष्ट लिखते हैं, उसी तरह वह स्वर कितने समय तक बजेगा यह भी निर्देशित करना आवश्यक है। इस कालमापन के इकाई को 'मात्रा' कहते हैं। इसका कोई अलग चिन्ह नहीं है।

जब कोई स्वराक्षर या ध्वन्याक्षर अकेला लिखा जाता है, तब उसका अर्थ है कि वह स्वर या ध्वनि एक मात्रा की है। जैसे - स री ग त ट झ त्र आदि।

**मात्रांश :** जब एक 'मात्रा' में एक से अधिक स्वर या ध्वनि आते हैं तब उन स्वरों या ध्वनियों के लिए अपेक्षित कालमान को 'मात्रांश' कहते हैं। एक मात्रा में आने वाले इन स्वराक्षरों - ध्वन्याक्षरों के नीचे एक कोष्टक लगाया जाता है।

जैसे: - यदि एक मात्रा  $9/2$  सेकंद की होने पर -

स - 9 मात्रा में 9 स्वर (एक स्वर  $9/2$  सेकंद का होगा)

स री - 9 मात्रा में 2 स्वर (हर एक स्वर  $9/8$  सेकंद का होगा)

स ग प - 9 मात्रा में 3 स्वर (हर एक स्वर  $9/6$  सेकंद का होगा)

त त त त - 9 मात्रा में 4 स्वर (हर एक स्वर  $9/4$  सेकंद का होगा)

रचना-शीर्षक के दाहिनी ओर ताल के पश्चात दिया हुआ अंक (जैसे - 360, 240, 960, 920, 900 इ.), एक मिनट में उस रचना की कितनी मात्राएं बजेगी यह दर्शाता है। उदा. 'खेमटा 360' ऐसा लिखा है, तो संचलन की गति एक मिनट में 920 रहेगी, किंतु मात्राएं 360 बजेगी।



**अवग्रह :** किसी भी स्वर को एक या अधिक मात्रा या मात्रांश के लिए दीर्घ करना हो, तो उस स्वर-विस्तार को 'S' इस अवग्रह चिन्ह से दर्शाया जाता है; तथा उसका उच्चार 'अ' होता है। उदा. यदि एक मात्रा का कालांश  $9/2$  सेकंद हो, तो -

स री ग S ..... एक मात्रा ग विस्तार ( $9/2$  सेकंद)

प S S S ..... तीन मात्रा प विस्तार ( $9/2$  सेकंद)

स S स स ..... प्रथम 'स' का 9 मात्रांश विस्तार ( $9/2$  सेकंद)

स S S ग ..... प्रथम 'स' का 2 मात्रांश विस्तार ( $9/4$  सेकंद)

मि  
म  
री  
नि  
स  
प  
डी  
S  
स  
ग  
घ  
री  
मि  
र



**यति** : किसी भी स्वर का (एक या अधिक मात्रा या मात्रांश के लिए) विराम करना हो, तो '-' इस 'यति-चिन्ह' से किया जाता है। उसका उच्चार 'य' होता है।

उदा. यदि एक मात्रा का कालांश  $\frac{1}{2}$  सेकंद हो, तो -

**प म ध -** : 'ध' के बाद १ मात्रा यति ( $\frac{1}{2}$  सेकंद)

**त त - त** : दुसरे 'त' के बाद १ मात्रांश यति ( $\frac{1}{4}$  सेकंद)

**स -** : 'स' के बाद १ मात्रांश यति ( $\frac{1}{4}$  सेकंद)

**- प** : प्रथम १ मात्रांश यति ( $\frac{1}{4}$  से.) बाद में 'प' ( $\frac{1}{4}$  से.)

अभ्यास की दृष्टि से प्रारंभ में यति के स्थान पर 'य' कह सकते हैं। बाद में 'य' का उच्चारण छोड़ कर, मन में उतने यति की गिनती करते हुए कहिए या बजाइए।

अवग्रह तथा यति साथ साथ आने पर लेखन निम्नानुसार होगा।

**री म S -** : १ मात्रा म विस्तार के बाद १ मात्रा यति ( $\frac{1}{2}$  सेकंद)

**स S - ग** : १ मात्रांश स विस्तार के बाद १ मात्रांश यति ( $\frac{1}{4}$  सेकंद)

अवग्रह तथा यति को स्वर जैसा ही माना जाता है। इसलिए इनके चिन्ह भी स्वराक्षर-ध्वन्याक्षर के स्तर पर ही अंकित किए जाते हैं।

**ताल** : मात्राओं की विशिष्ट, नियमबद्ध एवं रंजक योजना को 'ताल' कहते हैं। मात्राओं के इस विन्यास में जब न्हस्व-दीर्घता, आवर्तनात्मक गति, अवसान अथवा वस्तुमान, समांतरता, यति तथा कुछ बोल होते हैं, तब इसको 'ताल' की संज्ञा प्राप्त होती है।

लेखन करते समय प्रयुक्त गट, गण, चरण आदि के चिन्ह तथा वर्णन निम्नानुसार है।

**गट** : ताल के अनुसार एक या अधिक मात्राओं से बने विशिष्ट समूह को 'गट' कहते हैं। गट-चिन्ह ',' ऐसा होता है-।

**गण** : दो या अधिक गटों के समूह को 'गण' कहते हैं। गण-चिन्ह '।' ऐसा होता है, जिसे 'गणदंड' कहते हैं।

**चरण** : दो या अधिक गण एकत्र आने पर अथवा गणों के ताल-आवर्तन से 'चरण' बनता है। चरण-चिन्ह '||' को 'चरण-दंड' कहते हैं, जिसे चरण के प्रारंभ तथा अंत में अंकित करते हैं।

**पुनश्चरण** : किसी एक चरण का पुनर्वादन अपेक्षित होने पर, उस चरण के अंत में 'पुनश्चरण' का 'ः||' यह चिन्ह लगाया जाता है।





**केरवा ताल :** इसमें ४ मात्राएं तथा उसके १ गण में २ मात्राएं होती हैं। केरवा-१२० लय के १ मिनट में  $\frac{1}{2}$  सेकंद की १२० मात्राओं का वादन होता है। यह ताल १०० तथा १६० लय का भी होता है, जिनका प्रयोग कुछ उद्घोषों में किया गया है।

**खेमटा ताल :** उसमें १२ मात्राएं, तथा इसके १ गण में ६ मात्राएं होती हैं। इस ताल में संचलन करते समय  $\frac{1}{६}$  सेकंद की ३६० मात्राओं का वादन होता है।

**दादरा ताल :** यह ताल ६ मात्राओं का तथा इसके एक गण में ३ मात्राएं होती हैं। लय १२० का हो, तो हरेक मात्रा  $\frac{1}{2}$  सेकंद की होती है। यह ताल १८० लय का भी होता है।

**झपताल :** झपताल १० मात्राओं का तथा प्रत्येक गण में ५ मात्राएं होती हैं। इसके एक मिनट में  $\frac{1}{४}$  सेकंद की २४० मात्राओं का अथवा  $\frac{1}{2}$  सेकंद की १२० मात्राओं का वादन होता है।

**रूपक ताल :** इसमें सात मात्राएं होती हैं। इसके १ मिनट में  $\frac{1}{2}$  सेकंद की १२० मात्राओं का वादन होता है।

**लय :** एक मिनट में बजाए जाने वाली मात्राओं की संख्या उस रचना का 'लय' होती है।

**सांतर :** शंख, वंशी आदि वाद्यों में मुख्याग्र पर 'जिह्वाघात' (Tonguing) करते हुए प्रत्येक स्वर का अलग से बजाना ही 'सांतर' वादन कहलाता है। स्वरांतर का अन्य चिन्ह न लिखा हो, तो वादन 'सांतर' है ऐसा समझना चाहिए।

**निरंतर :** इन वाद्यों में 'जिह्वाघात' का प्रयोग न करते हुए एक ही फूंक में स्वर बदलने से 'निरंतर' वादन होता है। अर्धचंद्राकृति आकार का '∩' यह चिन्ह संबंधित स्वरों के ऊपर लगाकर निरंतर वादन सूचित किया जाता है।

अपना घोष प्रांगणीय कार्यक्रमों के लिए प्रयुक्त होने के कारण हमारा वादन सांतर-प्रधान है। तथापि रंजकता की दृष्टि से कहीं कहीं निरंतर वादन भी किया जाता है।

**आघात :** किसी विशिष्ट स्वर का वादन उसके सहज स्तर से भी अधिक जोर लगाकर करना अपेक्षित है, तो उस स्वर के ऊपर 'Λ' यह 'आघात-चिन्ह' अंकित करते हैं।

आघात के अन्य प्रकार, जिनका प्रयोग संचलन की रचनाओं में नहीं होता है, बल्कि उद्घोष में होता है, निम्नानुसार हैं।

ॐ इस स्वर की ध्वनि प्रारंभ में कम तथा धीरे धीरे अंत में बढ़ानी चाहिए।

ॐ इस स्वर की ध्वनि आरंभ में अधिकतम तथा अंत में धीरे धीरे न्यूनतम होगी।

ॐ इस स्वर की ध्वनि क्रमशः प्रारंभ में न्यूनतम, मध्य में अधिकतम तथा अंत में पुनः न्यूनतम आएगी।

परिणामकारीता बढ़ाने के लिए इन चिन्हों से अंकित आघातयुक्त वादन का प्रयोग किया जाता है।

